Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 12/March/2026 **IJRAW:** 2026; 5(5):230-233 **Accepted:** 22/April/2026

उदय प्रकाश की कहानियों में आधुनिकता बोध

***[1]सुमन**

*[1]शोध छात्रा, हिंदी विभाग, स्वामी सहजानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

उदय प्रकाश हिंदी साहित्य के समकालीन कथाकारों में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं, जिनकी कहानियाँ आधुनिक भारतीय समाज की जटिलताओं, सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, भूमंडलीकरण के प्रभावों और उत्तर-आधुनिकता की विशेषताओं को उजागर करती हैं। यह शोध पत्र उनकी प्रमुख कहानियों जैसे मोहनदास, तिरिछ, पीली छतरी वाली लड़की, दिल्ली की दीवारें और वारेन हेस्टिंग्स का साँड़ के माध्यम से आधुनिकता बोध की गहन पड़ताल करता है। यहाँ आधुनिकता बोध परंपरागत मूल्यों का विघटन, जाति-आधारित शोषण, शहरीकरण की विडंबनाएँ, दलित और हाशिए की चेतना, और वैश्वीकरण के प्रभावों के रूप में प्रकट होता है। उदय प्रकाश की रचनाएँ न केवल आधुनिकता की आलोचना करती हैं, बल्कि आधुनिकताबोध तत्वों जैसे विखंडित आख्यान, विडंबना, हाइपररियलिटी और आत्म-चेतन कथन शैली के माध्यम से समकालीन समाज की जटिलताओं को दर्शाती हैं। यह अध्ययन साहित्यिक विश्लेषण, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ और आलोचनात्मक सिद्धांतों पर आधारित है।

मुख्य शब्द: शहरीकरण, पलायन, औद्योगीकरण, वैयक्तिकता, पारिवारिक टूटन, मूल्य विघटन अकेलापन व अजनबीपन की त्रासदी।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में आधुनिकता बोध का विकास 19वीं सदी के अंत में औपनिवेशिक प्रभावों, राष्ट्रवादी चेतना और सामाजिक सुधार आंदोलनों के साथ शुरू हुआ। 20वीं सदी के उत्तरार्ध में, खासकर 1980-90 के दशक में, भारत में आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण और शहरीकरण ने साहित्य में नए सवाल उठाए। आधुनिकता बोध साहित्य में प्रगति, तर्कवाद, व्यक्तिवाद, और सामाजिक परिवर्तन की चेतना को संदर्भित करता है। भारतीय संदर्भ में आधुनिकता औपनिवेशिक प्रभावों, राष्ट्रवादी आंदोलनों और उत्तर-उपनिवेशिक चुनौतियों से आकार लेती है। 20वीं सदी के अंत में वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण ने आधुनिकता को नए आयाम दिए, जिसमें पूँजीवाद, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति शामिल हैं। हालाँकि, यह प्रगति असमानता, सांस्कृतिक विघटन और हाशिए के समुदायों के शोषण का कारण भी बनी। उदय प्रकाश (जन्म: 1 जनवरी 1952, सीतापुर, मध्य प्रदेश) इस दौर के एक प्रमुख कथाकार हैं, जिनकी रचनाएँ आधुनिक भारत की विसंगतियों को उजागर करती हैं। उनकी कहानियाँ विकास की चमक के पीछे छिपी गरीबी, जातिवाद, सांस्कृतिक विघटन और हाशिए के लोगों के संघर्ष को चित्रित करती हैं।

उदय प्रकाश की कहानियाँ आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता के बीच एक सेतु का काम करती हैं। जहाँ आधुनिकता प्रगति, तर्क और एकरेखीय विकास पर जोर देती है, वहीं उत्तर-आधुनिकता इन धारणाओं को चुनौती देती है। उदय प्रकाश की रचनाएँ आधुनिकता के दावों—जैसे सामाजिक समानता, तकनीकी प्रगति और आर्थिक विकास—को विडंबनापूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उदाहरण के लिए, मोहनदास में आधुनिक नौकरशाही और डिजिटल प्रणाली दलित नायक को और हाशिए पर धकेलती है। इसी तरह, दिल्ली की दीवारें में शहरीकरण और पूँजीवाद की चमक के पीछे छिपी गंदगी और भ्रष्टाचार को उजागर किया गया है।

उदय प्रकाश की कहानियाँ परंपरागत हिंदी कहानी की संरचना को तोड़ती हैं। वे स्वप्न, जागरण, मिथक और वास्तविकता के मिश्रण का उपयोग करते हैं, जो उनकी रचनाओं को आधुनिकताबोध बनाता है। उदाहरण के लिए, वारेन हेस्टिंग्स का साँड़ में औपनिवेशिक इतिहास को आधुनिक विडंबना के साथ जोड़ा गया है। उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य की सीमाओं को लाँघकर अंग्रेजी, जर्मन और अन्य भाषाओं में अनूदित हुई हैं, जो उनकी वैश्विक प्रासंगिकता को दर्शाती हैं। उनकी कहानियाँ दलित-आदिवासी चेतना, ग्रामीण-शहरी टकराव और वैश्वीकरण की आलोचना पर केंद्रित हैं, जो उन्हें समकालीन साहित्य में अद्वितीय बनाती हैं।

उदय प्रकाश की कहानियों में आधुनिकता बोध दोहरे रूप में प्रकट होता है: एक ओर प्रगति और विकास का वादा, दूसरी ओर उसकी विडंबनाएँ। उनकी रचनाएँ उत्तर-आधुनिकता की विशेषताएँ जैसे विखंडित कथानक, आत्म-चेतन लेखन, हाइपररियलिटी (मीडिया द्वारा निर्मित अतियथार्थ), और विडंबना को अपनाती हैं। उदय

***Corresponding Author:** सुमन

प्रकाश आधुनिकता को एक ऐसे चश्मे से देखते हैं, जो विकास के लाभों को हाशिए के लोगों तक पहुँचने से रोकने वाली व्यवस्थागत खामियों को उजागर करता है। उनकी कहानियाँ जातिवाद, पूँजीवाद, और शहरीकरण के प्रभावों की आलोचना करती हैं, जो आधुनिक भारत की जटिल वास्तविकता को दर्शाती हैं।

उदय प्रकाश की रचनाएँ परंपरागत कथा-शिल्प को चुनौती देती हैं और उत्तर-आधुनिकता की विशेषताएँ जैसे विखंडित आख्यान, आत्म-चेतन लेखन, और वास्तविकता-स्वप्न का मिश्रण अपनाती हैं। उनकी प्रमुख कहानी-संग्रहों में तिरिछ (1990), मोहनदास (2006), पीली छतरी वाली लड़की (2001), दिल्ली की दीवारें (2013) और वारेन हेस्टिंग्स का साँड़ (1994) शामिल हैं। मोहनदास को साहित्य अकादमी पुरस्कार (2011) प्राप्त हुआ, जो दलित चेतना और आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था की विडंबनाओं को दर्शाती है। यह शोध पत्र उनकी कहानियों में आधुनिकता बोध को सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से विश्लेषित करता है, जो पहचान संकट, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक परिवर्तन जैसे मुद्दों पर केंद्रित है।

आधुनिकताबोध के तत्व उनकी कहानियों में स्पष्ट हैं। विखंडित कथानक (मोहनदास में लेखक की उपस्थिति), हाइपररियलिटी (दिल्ली की दीवारें में मीडिया की भूमिका), और मिथक-वास्तविकता का मिश्रण (तिरिछ और वारेन हेस्टिंग्स का साँड़) उनकी रचनाओं को पारंपरिक साहित्य से अलग करते हैं। ये तत्व आधुनिकता की एकरेखीय प्रगति की धारणा को खंडित करते हैं और पाठक को समाज की जटिलताओं पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। उदय प्रकाश की कहानियाँ आधुनिकता की दोहरी प्रकृति—प्रगति का आकर्षण और उसका संकट—को गहराई से चित्रित करती हैं। नीचे उनकी प्रमुख कहानियों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत है:

1. मोहनदास

मोहनदास उदय प्रकाश की सबसे चर्चित कहानी है, जो एक दलित नायक मोहनदास की पहचान चोरी की घटना पर आधारित है। कहानी में एक ऊँची जाति का व्यक्ति मोहनदास का दलित प्रमाण-पत्र चुराकर सरकारी नौकरी हथिया लेता है, जो आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था की विफलता और भ्रष्टाचार को उजागर करता है। यहाँ आधुनिकता बोध पहचान संकट के रूप में प्रकट होता है—डिजिटल युग और नौकरशाही में भी दलितों की आवाज दबाई जाती है। कहानी में लेखक स्वयं को कथानक में शामिल करते हैं, जो आधुनिकताबोध तकनीक (मेटा-नैरेटिव) का उदाहरण है। यह रचना दलित चेतना का सशक्त दस्तावेज़ है, जो आधुनिक विकास के दावों को चुनौती देती है। कहानी में जाति, शक्ति और पूँजी के गठजोड़ को उजागर किया गया है, जो आधुनिक भारत में सामाजिक न्याय की कमी को दर्शाता है। गोपाल कुमार अपनी समीक्षा 'मोहनदास में अभिव्यक्त जीवन संघर्ष' में लिखते हैं कि आज का युग भौतिकवादी युग है। भूमंडलीकरण एवं बाजारीकरण के इस युग ने जहाँ आम आदमी के जीवन में सुख-सुविधाओं के ढेर लगा दिये हैं, वहीं आम आदमी के सामने कई नई चुनौतियाँ भी पेश की हैं।आज का युवा वर्ग रोजगार की खोज में, बेहतर जीवन की आशा लिये गाँव से नगर और नगर से महानगर की ओर आता है। लेकिन गाँव के खुले वातावरण में रहने का अभ्यस्त इंसान भी नगरों और महानगरों के घुटन-भरे माहौल में रहने को बाध्य हो जाता है।" [1]

मोहनदास कहानी में विखंडित कथानक की बात किया जाता है. यह आधुनिकताबोध कथा-लेखन की एक केंद्रीय विशेषता है। पारंपरिक कहानियों में आरंभ-मध्य-अंत की स्पष्ट संरचना होती है, जहाँ लेखक अदृश्य रहता है और कथा एक स्वाभाविक प्रवाह में आगे बढ़ती है। किंतु 'मोहनदास' जैसी कहानी में लेखक स्वयं कथा के भीतर उपस्थित दिखाई देता है। लेखक का यह आत्म-सचेत हस्तक्षेप कथा की पारंपरिक निरंतरता को तोड़ देता है और पाठक को यह बोध कराता है कि वह जिस कहानी को पढ़ रहा है, वह एक निर्मित संरचना है, कोई निर्विवाद यथार्थ नहीं। इस प्रकार कथा का विखंडन पाठक को केवल कहानी के पात्रों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे लेखन की प्रक्रिया और सत्ता-संरचना पर भी विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

2. तिरिछ

तिरिछ एक ग्रामीण परिवार के संघर्ष की कहानी है, जो आधुनिक चिकित्सा और शिक्षा की कमी से जूझता है। कहानी का शीर्षक 'तिरिछ' (एक जहरीली मछली) आधुनिकता की चमकदार लेकिन विषैली प्रकृति का प्रतीक है। ग्रामीण भारत में आधुनिक सुविधाओं का अभाव और शहरीकरण का प्रभाव परंपरागत जीवन-मूल्यों को नष्ट करता है। कहानी में स्वप्न और वास्तविकता का मिश्रण, साथ ही मिथकीय तत्वों का उपयोग, इसे आधुनिकताबोध बनाता है। यहाँ आधुनिकता बोध ग्रामीण-शहरी द्वंद्व और विकास की असमानता के रूप में उभरता है। कहानी यह प्रश्न उठाती है कि क्या आधुनिक प्रगति वास्तव में हाशिए के समुदायों तक पहुँच पाती है। रवि रंजन अपनी किताब 'साहित्य का समाजशास्त्र और सौन्दर्यशास्त्र व्यावहारिक परिदृश्य' में लिखते हैं कि समकालीन हिन्दी कहानीकारों में कुछ ऐसे भी हैं, जिनकी रचनाओं में विस्मय की व्याख्या करते हुए विश्वास तक पहुँचने के बजाय छद्म आधुनिकता के दबाव के तहत विस्मय से संशय व निराशा हताशा की कलह-कोलाहलपूर्ण गलियों से होते हुए अन्ततः अविश्वास तक पहुँचने की प्रवृत्ति दिखाई देती है और कहना न होगा कि ऐसी कहानियों में मानवीय संसक्ति की खोज बेमानी है। चूँकि विस्मय से अविश्वास तक की यह यात्रा आधुनिकता की तमाम तथाकथित शर्तों अलगाव, संत्रास, मूल्यविघटन आदि को न सिर्फ पूरी करती है, बल्कि कई बार उसे महिमामंडित भी करती है, इसलिए इसके तहत रचित कहानियाँ हमारी संवेदना को सकारात्मक रूप में समृद्ध करने के बजाय हमें डराती हैं। उदयप्रकाश की एक चर्चित कहानी 'तिरिछ' के मद्देनजर यह बात समझी समझायी जा सकती है। इस कहानी की विषयवस्तु है 'अमानुषिक होता जा रहा हमारा समाज' । कहानीकार इस विषयवस्तु को शिल्प-विषयक इतने सारे चमत्कारों के साथ परोसता है कि पाठक केवल स्तंभित रह सकता है।" [3]

3. पीली छतरी वाली लड़की

यह लंबी कहानी आधुनिक प्रेम, शहरी अलगाव और सांस्कृतिक मिश्रण की पड़ताल करती है। नायक और नायिका का संबंध भूमंडलीकरण के प्रभाव में वैश्विक और स्थानीय मूल्यों के टकराव को दर्शाता है। शहरी परिवेश में व्यक्तिवाद और सामाजिक बंधनों का द्वंद्व इस कहानी का केंद्रीय विषय है। कहानी की बहु-स्तरीय संरचना और आत्म-चेतन लेखन शैली इसे आधुनिकताबोध बनाती है। आधुनिकता बोध यहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता की खोज और शहरी जीवन की अकेलापन-भरी वास्तविकता के रूप में प्रकट होता है। कहानी में पीली छतरी एक प्रतीक के रूप में उभरती है, जो प्रेम और आशा के बीच शहरी जटिलताओं को दर्शाती है। केशव राय अनंत लिखते हैं कि "हिंदी कथा साहित्य में उदय प्रकाश एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से आधुनिकता, भूमंडलीकरण, विकास की तमाम अवधारणाओं के बीच तिल-तिल घुटते समाज की पूरी तस्वीर खींच ली है। आधुनिकता, भूमंडलीकरण, विकास की तमाम अवधारणाओं ने हमारे समाज एवं देश में उपभोक्तावादी संस्कृति को जन्म दिया है। भूमंडलीकरण और उदारीकरण के नाम पर पूँजीवाद ने जिस तरह से ओछी पाश्चात्य संस्कृति और उपभोक्तावादी संस्कृति को हमारे समाज में फैलाया है, उससे न सिर्फ़ व्यक्ति प्रभावित हुआ है बल्कि व्यक्ति के

साथ भारतीय परिवार, समाज, हमारी सभ्यता एवं संस्कृति भी पूरी तरह प्रभावित हुई है। इस उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को पूरी तरह से तहस-नहस कर दिया है। उदय प्रकाश की अधिकांश कहानियाँ उपभोक्तावादी संस्कृति के साइड इफ़ेक्ट से प्रभावित हैं। 'तिरिछ', 'और अंत में प्रार्थना', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'पीली छतरी वाली लड़की', 'दत्तात्रेय के दुःख', 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड' आदि ऐसी अनेक कहानियाँ हैं जिनमें उदय प्रकाश ने उपभोक्तावादी संस्कृति और इस उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्परिणाम पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उत्तर आधुनिकता, उपभोक्तावादी संस्कृति और पूँजीवाद ने हमारे देश की मानवीय संवेदना को नष्ट किया। इन्हीं की वजह से हमारे देश में दिन-प्रतिदिन सामाजिक-अवमूल्यन, राजनीतिक क्षेत्रियतावाद, जातिवाद, सांप्रदायिक राष्ट्रवाद, बेरोज़गारी आदि की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। उदय प्रकाश ने इन तमाम समस्याओं पर नज़र डाली और उन समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया। 'पीली छतरी वाली लड़की' एक ऐसी ही लंबी कहानी है जिसमें उन्होंने राहुल और अंजली की प्रेम कहानी के माध्यम से तमाम समस्याओं को उभारने का प्रयास किया है।" [3]

4. दिल्ली की दीवारें

इस संग्रह में तीन कहानियाँ (मोहनदास, मैंगोसिल, और दिल्ली की दीवारें) शामिल हैं, जो शहरी भारत की विसंगतियों को उजागर करती हैं। मैंगोसिल में एक बच्चे का सिर असामान्य रूप से बढ़ना आधुनिक शिक्षा और ज्ञान की विडंबना को दर्शाता है—जो प्रगति का प्रतीक होने के बावजूद विकृति का कारण बनता है। दिल्ली की दीवारें में काला धन, भ्रष्टाचार और शहरी गरीबी को चित्रित किया गया है, जो आधुनिक पूँजीवाद की आलोचना करता है। यहाँ आधुनिकता बोध शहरी गंदगी, सामाजिक असमानता और नैतिक पतन के रूप में प्रकट होता है। कहानी में हाइपररियलिटी (मीडिया द्वारा निर्मित अतियथार्थ) और विडंबना का उपयोग आधुनिकताबोध शैली को रेखांकित करता है। ज्योतिष जोशी अपने शोध आलेख 'भूमंडलीकरण, बाजारवाद और उत्तर-आधुनिकता के दौर में हिन्दी' में लिखते हैं कि "इसी दौर में उदय प्रकाश की दो कहानियाँ 'मोहनदास' और 'मैंगोसिल' क्रमशः 'हंस' तथा 'पहल' में छपीं और खूब चर्चित हुई, क्योंकि उनमें आज के उपभोक्तावादी समय की सारी जड़ताओं के वे ज्वलन्त प्रश्न अंकित हैं जिनसे हमारा समाज लगातार जूझ रहा है। विचित्र ही है कि ऐसे कठिन दौर में उत्तर-आधुनिकता के पैरोकारों ने इतिहास और परम्परा को मृत घोषित कर हमारी सोचने-समझने की शक्ति को भी कुन्द कर दिया है। परम्परा की बात करते ही हम पिछड़े हो जाते हैं। यह भूमण्डलीकरण की विश्वव्यापी योजना का ही हिस्सा है। भूमण्डलीकरण को लेकर बौद्धिकों में अलग-अलग तरह की राय है।" [4] आधुनिकता का एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्व है हाइपररियलिटी, जिसका उदाहरण 'दिल्ली की दीवारें' में मीडिया की भूमिका के माध्यम से सामने आता है। आधुनिकताबोध चिंतक जाँ बोद्रिया के अनुसार हाइपररियलिटी वह स्थिति है, जहाँ वास्तविकता से अधिक प्रभावशाली उसका मीडिया-निर्मित रूप हो जाता है। कहानी में दिल्ली जैसे ऐतिहासिक और राजनीतिक नगर की छवि वास्तविक अनुभव से अधिक मीडिया द्वारा रचे गए बिंबों पर आधारित प्रतीत होती है। समाचार, अफ़वाहें, दृश्य-माध्यम और प्रचार वास्तविकता को इस प्रकार ढँक लेते हैं कि सच और झूठ के बीच की सीमा धुंधली हो जाती है। लेखक इस स्थिति को कहानी में उभारकर यह दिखाता है कि समकालीन समाज में व्यक्ति जिस यथार्थ को जी रहा है, वह वास्तव में मीडिया द्वारा गढ़ा गया एक कृत्रिम यथार्थ भी हो सकता है। यह दृष्टि आधुनिकता के उस विश्वास को तोड़ती है जिसमें सत्य को स्थिर और वस्तुनिष्ठ माना जाता था।

5. वारेन हेस्टिंग्स का साँड़

यह कहानी औपनिवेशिक इतिहास और आधुनिक भारत के बीच एक विडंबनापूर्ण संवाद स्थापित करती है। कहानी में एक साँड़, जो औपनिवेशिक शासक वारेन हेस्टिंग्स से जुड़ा है, आधुनिक भारत में अराजकता का प्रतीक बनता है। यहाँ आधुनिकता बोध औपनिवेशिक विरासत और समकालीन सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों के मिश्रण के रूप में उभरता है। कहानी की अतियथार्थवादी शैली और मिथकीय तत्व इसे आधुनिकताबोध बनाते हैं। यह रचना इतिहास, स्मृति और वर्तमान की जटिलताओं को जोड़ती है, जो आधुनिक भारत की सांस्कृतिक पहचान के संकट को दर्शाती है। लड़ी है। अपनी कहानी 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड़' की तकनीक पर विचार व्यक्त करते हुए उदय प्रकाश ने कहा- 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड़' एक तरह की रूपकथा है। हमारे देश के औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया को समझने की एक कोशिश। वह प्रक्रिया जो इतिहास में घटित होती है और वह इतिहास जिसके अंत की घोषणा उत्तर आधुनिकतावादी कर रहे हैं, किसलिए? इसलिए कि हम नये औपनिवेशीकरण, अपनी नयी गुलामी को पहचान न सकें, और उसका प्रतिरोध न कर सकें। आज का माहौल कैसा है? जरा भी इतिहास या परम्परा की बात करिए, आपको 'ओरिएंटलिस्ट, पिछड़ा हुआ', 'सांस्कृतिक राष्ट्रवादी' घोषित कर दिया जायगा। हमारी भाषा मर रही है, हमारा खान-पान, हमारी वेशभूषा, पगड़ी धोती, अचार-चटनी सब मर रहे हैं।" [5] आधुनिकता का तीसरा प्रमुख पक्ष है मिथक और वास्तविकता का मिश्रण, जो 'तिरिछ' और 'वारेन हेस्टिंग्स का साँड़' जैसी कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पारंपरिक साहित्य में मिथक को या तो ऐतिहासिक सत्य माना जाता था या कल्पनात्मक कथा के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। किंतु आधुनिकताबोध लेखन में मिथक और इतिहास, कल्पना और यथार्थ के बीच की रेखाएँ मिट जाती हैं। 'वारेन हेस्टिंग्स का साँड़' में औपनिवेशिक इतिहास, सत्ता और मिथकीय प्रतीकों का जो मेल है, वह यह संकेत करता है कि इतिहास स्वयं भी एक आख्यान है, जिसे सत्ता अपने हित में गढ़ती है। मिथक यहाँ केवल अतीत की कहानी नहीं, बल्कि वर्तमान की सामाजिक-राजनीतिक सच्चाइयों को समझने का औज़ार बन जाता है।

उपर्युक्त सभी तत्वों के माध्यम से लेखक की रचनाएँ आधुनिकता की एकरेखीय प्रगति की धारणा को खंडित करती हैं। आधुनिकता यह मानती थी कि समाज तर्क, विज्ञान और विकास के सहारे निरंतर बेहतर होता जाएगा। इसके विपरीत आधुनिकताबोध दृष्टि यह दिखाती है कि विकास के साथ-साथ विसंगतियाँ, अन्याय, भ्रम और पहचान-संकट भी बढ़ते हैं। लेखक की कहानियाँ इसी विडंबना को सामने लाती हैं—जहाँ प्रगति का दावा करने वाला समाज भीतर से खंडित और अस्थिर दिखाई देता है। अंततः ये आधुनिकताबोध तत्व पाठक को केवल मनोरंजन नहीं देते, बल्कि उसे समाज की जटिलताओं पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। पाठक यह समझने लगता है कि सत्य एक नहीं, अनेक हैं; इतिहास निष्पक्ष नहीं, बल्कि सत्ता-निर्मित है; और यथार्थ सीधा-सरल नहीं, बल्कि परतों में बँटा हुआ है। इस प्रकार लेखक की कहानियाँ पारंपरिक साहित्यिक सीमाओं को तोड़ते हुए पाठक को एक आलोचनात्मक, प्रश्नाकुल और जागरूक दृष्टि प्रदान करती हैं, जो आधुनिकताबोध साहित्य की मूल पहचान है।

निष्कर्ष

उदय प्रकाश की कहानियाँ आधुनिकता बोध को एक आलोचनात्मक और बहु-आयामी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं। वे प्रगति के वादों और उनकी विडंबनाओं को उजागर करती हैं, साथ ही उत्तर-आधुनिकता की विशेषताओं के माध्यम से समकालीन समाज की जटिलताओं को चित्रित करती हैं। उनकी रचनाएँ दलित

चेतना, सामाजिक असमानता, और सांस्कृतिक विघटन जैसे मुद्दों को संवेदनशीलता के साथ उठाती हैं। उदय प्रकाश न केवल सामाजिक यथार्थ को चित्रित करते हैं, बल्कि पाठक को आधुनिकता की नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। भविष्य के शोध में उनकी कविताओं, फिल्मों और निबंधों को शामिल कर उनकी रचनात्मकता का और विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है। उनकी कहानियाँ हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान हैं, जो आधुनिक भारत की सच्चाई को बिना किसी लाग-लपेट के सामने लाती हैं।

सन्दर्भ

1. त्रैमासिक ई-पत्रिका अपनी माटी, (ISSN 2322-0724) वर्ष-3, अंक-24, मार्च, 2017
2. रंजन, रवि, साहित्य का समाजशास्त्र और सौन्दर्यशास्त्र व्यावहारिक परिदृश्य, वाणी प्रकाशन
3. नई दिल्ली, संस्करण 2012, पृष्ठ 122
4. अनंत, केशव राय, हिंदी की विकास यात्रा, स्टोरीमिरर इंफोटेक प्राईवेट लिमिटेड, मुंबई, संस्करण
5. 2024, पृष्ठ 120-21
6. जोशी, ज्योतिष, साहित्यिक पत्रकारिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 141
7. कथादेश, जुलाई, 1999, पृ 17।